Toppersnotes
Unleash the topper in you

1st - ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम - प्रश्न पत्र

भाग - 5

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग	1
2	गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश	10
3	चौहानों का इतिहास	15
4	मेवाड़ का इतिहास	27
5	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	41
6	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	51
7	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	62
8	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	70
9	प्रजामंडल आंदोलन	78
10	राजस्थान में किसान आंदोलन	86
11	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	93
12	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	97
13	राजस्थान के संत और लोक देवी - देवता	105
14	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	118
15	राजस्थान की चित्रकला	141
16	राजस्थान के मेले और त्योहार	152
17	राजस्थान के प्रमुख रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	164
18	राजस्थान के आभूषण एवं वेशभूषा	169
19	राजस्थान के प्रसिद्ध लोक गीत	175
20	राजस्थान के लोक नृत्य	185
21	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	192
22	राजस्थान का साहित्य	196

1 CHAPTER राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग

राजस्थान में पुरापाषाण युग (500000 ईसा पूर्व- 10000 ईसा पूर्व)

- इस काल में मानव पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था और उसे धातु गलाने और उसे उपकरण निर्माण की कला का ज्ञान नही था।
- पुरापाषाण युग 3 उपयुगों में विभाजित किया जाता है-

निम्न पुरापाषाण युग (5,00,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व)

- मुख्य रूप से अरावली के पूर्व में केन्द्रित है।
- **विशिष्ट पाषाण औजार** - हेंडएक्स, फ्लेक्स और क्लीवर।
- औजार बनाने के लिए कच्चा माल - क्वार्टजाइट, क्वार्ट्ज और बेसाल्ट ।
- राजस्थान में प्रारंभिक पाषाण युग के स्थलों की पहचान एचुलियन संस्कृति (शिकारी संस्कृति) के रूप में फ्रांसीसी साइट सेंट अचेउल के नाम पर रखा गया है।
- राजस्थान के निम्न पुरापाषाण स्थल - मंडपिया, बींगोद, देवली, नाथद्वारा, भैंसरोड़गढ़ और नावघाट।
- भीलवाडा में बनास नदी के किनारे स्थित मंडपिया की खोज वी. एन. मिश्रा ने की थी ।

मध्य पुरापाषाण (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- राजस्थान में मध्य पुरापाषाण स्थल - लूनी घाटी, पाली और जोधपुर, मोगरा, नागरी, बारिधानी, समदड़ी, लूनी, धुंधाड़ा , श्रीकृष्णपुरा, गोलियो, हुंडगाँव, भावी, पिचाक आदि ।

उच्च पुरापाषाण काल (20,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- महत्वपूर्ण खोज - राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में 40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्के मिले।
- बस्तियाँ - जल के स्थायी स्रोतों के पास स्थित होने की एक विशिष्ट प्रवृत्ति।
- मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्र (भीमबेटका) के रूप में उत्तर पुरापाषाण काल का है।
- **राजस्थान में उच्च पुरापाषाण स्थल** - उत्तर पाषाणकालीन औजार एवं अवशेष मुख्यतः चम्बल, भैसरोड़गढ़, नवाघाट, बनास तट पर हमीरगढ़, जहाजपुर, देवली व गिलुण्ड, लूनी नदी के तट पर पाली, समदड़ी, शिकारपुर, सोजत, पीपाड़, खींवसर, बनास नदी के तट पर टोंक में भरनी आदि अनके स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान में मध्यपाषाण युग (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

बागोर

- मध्यपाषाणकालीन स्थल
- भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे स्थित |
- यह एक बड़े रेत के टीले के रूप में है जिसे महासती कहा जाता है।
- प्रथम उत्खनन 1967 में वी. एन. मिश्रा और डॉ. एल एस लेश्निक द्वारा ।
- इस स्थल से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।
- उद्योग की दृष्टि से भारत का सबसे समृद्ध लघुपाषाणिक स्थल है।

- राजस्थान के 2 क्षेत्रों में मध्य पाषाणकालीन स्थल विशेष रूप से खोजे गए हैं -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (मेवाड़)
  - पश्चिमी राजस्थान में निचला लूनी बेसिन
- हालाँकि अधिकतम लघुपाषाणोपकरण उपयोग करने वाले मध्यपाषाण स्थल अरावली विभाजन के पूर्व में दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में खोजे गए हैं ।
  - उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बागौर
- **स्क्रेपर** –
  - 3 × 10 सेमी लम्बा आयताकार तथा गोल औजार ।
  - एक अथवा दोनों किनारों पर धार और एक किनारा पकड़ने के काम आता था।
- **पॉइंट**
  - त्रिभुजाकार स्क्रेपर के बराबर लम्बा तथा चौड़ा उपकरण हैं।
  - 'नोक' या 'अस्त्राग्र' के नाम से भी जाना जाता था।
  - प्राप्ति - चित्तौड़ की बेड़च नदी की घाटियों में, लूनी व उसकी सहायक नदियों की घाटियों में तथा विराटनगर से।

राजस्थान में नवपाषाण काल

- राजस्थान में मानव मध्यपाषाणकाल से सीधा उत्तर पाषाणकाल में प्रवेश कर गया था।
  - इसलिए राजस्थान में नवपाषाण काल की सभ्यता प्राप्त नहीं होती हैं।
- **राजस्थान में अवशेष -** बनास नदी के तट पर हम्मीरगढ़, जहाजपुर (भीलवाड़ा), लूनी नदी के तट पर समदड़ी (बाड़मेर) तथा भरणी (टोंक)।
- चमकदार मृद्भा**ण्ड**, धूसर म मृद्भा**ण्ड** तथा मंद वर्ण मृद्भा**ण्ड के** अवशेष ।

ताम्रयुगीन सभ्यताए

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम "ताम्रवती" अंकित है। [PC – 2007]
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे "आघाटपुर/ आघाट दुर्ग" या "धूलकोट" या "ताम्रवती नगरी", "ताम्बावली" कहा जाता था।

[1st/2nd/3rd Gra/CET – 2023/Lab Ass/FG - 2022]

- आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है। [3rd Grade -2023]
- यह बनास नदी क्षेत्र [बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी] में होने की वजह से इसे बनास सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि की इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में आहड़ सभ्यता के कई स्थल मौजूद है जैसे गिलुण्ड,ओझियाना, बालाथल, पछमता,भगवानपुरा, रोजड़ी आदि।

[CET – 2023, 3rd Grade - 2023]

- **अवधि** – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- **काल** – ताम्र पाषाण काल [Raj PSI -2021]
- **प्रथम उत्खनन कार्य** – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास की अध्यक्षता में। [2nd/3rd Gra -2023/COPA -2023]
- **अन्य उत्खननकर्ता** – 1953-1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया [CET – 2023]

- आहड़ में खुदाई के बाद एक 4000 साल पुरानी ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति की खोज की गई थी, जिसे धूलकोट नामक एक टीले के नीचे दबा दिया गया था

[EO/RO - 2023]

- आहड़ का सम्पूर्ण कालक्रम दो कालखण्डों में बांटा जा सकता है-प्रथम कालखण्ड 'ताम्रयुगीन' व द्वितीय कालखण्ड 'लौहयुगीन' सभ्यता के द्योतक है।

विशेषताएँ [RAS – 2021, ARO -2022]

- **प्रमुख उद्योग** - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
  - ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
  - ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त
- निवासी **शवों** को उनके **आभूषणों के साथ दफनाते** थे।
- **माप तोल** के बाट प्राप्त
  - वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले मृद्भा**ण्ड** का प्रयोग किया जाता था।

[2nd Grade -2023]

  - मृद्भा**ण्ड उल्टी तिपाई विधि** से बनाये गए है।
- इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

गोरे व कोठ [2nd Grade – 2017]

- आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड |
  - प्रमुख खाद्यान्नों - गेहूँ, ज्वार और चावल

[2nd Gra-2019]

आहड़ में पाए जाने वाली मुद्राएं

- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें • एक मुद्रा पर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर अपोलो देवता अंकित है जिसके हाथ में तीर और तरकश है।

"बनासियन बुल"

- आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।

धर्मा संस्कृति

- राजसमन्द में गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्मा संस्कृति मिली है ।
- अंतर आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका प्रचुर उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

- मकानों की **नींवो** में **पत्थरों** का प्रयोग
- **ताँबा गलाने** की **भट्टियाँ** [EO/RO – 2023]
- कपड़े की छपाई हेतु **लकडी** के बने **ठप्पे**
- ईरानी शैली के छोटे **हत्थेदार बर्तन**
- **हड्डी** का **चाकू**
- **सिर खुजलाने** का **यंत्र**
- मिट्टी का **तवा**
- **सुराही**
- एक मकान में **7 चूल्हे** एक पंक्ति में
- टेराकोटा निर्मित **2 स्त्री धड़**
- लेपिस लाजुली -आहड़ के उत्खनन से प्राप्त सामग्री जो बाह्य सम्पर्कों (ईरान) का संकेत देती है ।
- रसोई में दो या तीन मूँह वाले चूल्हे तथा बलुए पत्थर के सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं। [Women Supervisor-2019]

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	• उत्खनन वर्ष 2015 • उदयपुर में स्थित है। • हड़प्पा के समकालीन है।
गिलुण्ड सभ्यता	• **राजसमंद** जिले में **बनास नदी** के तट पर स्थित। [Lab Ass/JEN/वनरक्षक -2022] • **ग्रामीण** संस्कृति थी। • 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया। • **महत्वपूर्ण स्थल** - बनास व आहड़ ○ इसलिए इसे **ताम्रयुगीन सभ्यता** कहते है। [JEN -2020] • 100×80 आकार के **विशाल भवनों** के अवशेष । • 5 प्रकार के मृद्भांड प्राप्त: ○ सादे काले, पालिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित

	• यह ज्यामितीय अलंकरणों के साथ प्राकृतिक अलंकरण में भी उपलब्ध होते हैं। ○ आहड़ में केवल ज्यामितीय अलंकरणों का प्रयोग हुआ हैं।
बालाथल	• **उदयपुर** (राजस्थान) नगर से 42 किमी दक्षिण-पूर्व में वल्लभनगर तहसील में स्थित। [Sci Ass 2019/Raj Police -2022] • 3200 ई. पू. में अस्तित्व में आया। • **नदी** - बेडच [वनरक्षक -2022] • **खोजकर्ता -** 1962-63 में वी .एन .मिश्र द्वारा [वनरक्षक -2022, 3rd Grade -2023] • लोगों ने **पत्थर** और **मिट्टी** की **ईंटों** के बड़े-बड़े मकान बनाये । ○ 11 कमरों के विशाल भवन के अवशेष। [JEN -2016] ○ अन्य ताम्रपाषाणयुगीन स्थलों पर केवल मिट्टी के छोटे मकानों के ही प्रमाण। ○ दुर्गीकरण के पुरावशेष मिले [FSO -2019] • यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "**भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण**" माना जाता है। • पूर्वी छोर पर लगभग **5 एकड़** क्षेत्र में फैला एक बड़ा **टीला** है। • **मृद्भाण्ड** ○ **2 प्रकार** के विशेष आकार प्रकार के **चमकदार** मृद्भा**ण्ड** मिले हैं - एक खुरदरी दीवारों वाले तथा दूसरे चिकनी मिटटी की दीवारों वाले। ○ परिष्कृत मृद्भाण्डों में **प्यालियाँ** और **कटोरियाँ** शामिल हैं। • **परवर्ती हड़प्पायुगीन** लौह औजार **प्रधूर मात्रा** में पाये गये । ○ **लोहा गलाने** की **भट्टियाँ** भी प्राप्त हुई। • **योगी** मुद्रा में **शवाधान** किया जाता था। • लोग **कृषि**, **आखेट** तथा **पशुपालन** में लिप्त थे।
ओझियाना सभ्यता	• **भीलवाड़ा** के बदनोर के पास **कोठारी नदी** पर स्थित। [Lab Ass – 2022] ○ आहड़ या बनास संस्कृति का ताम्रपाषाणिक स्थल। • **सफेद बैल** की मृण मूर्तियाँ प्राप्त - **ओझियाना बुल**।
	• **कालखण्ड** - 2000 ईं. पू. से 1500 ईं. पू. के लगभग । • **उत्खनन** - 1999-2000 में वी आर. मीणा व आलोक त्रिपाठी के नेतृत्व में । [Const -2022] • यह दूसरी नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित है।

गणेश्वर (नीमकाथाना)

- **नीम-का-थाना** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित है।
  [EO/RO – 23VDO Mains -22/3rd Gra -23]
- **2800 ईसा पूर्व** में विकसित।
- गणेश्वर सभ्यता - "**पुरातत्व का पुष्कर**"।
- ताम्रयुगीन संस्कृति का **प्रचुर भंडार प्राप्त** ।
  - इसीलिए "**ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी" / ताम्र संचयी संस्कृति** कहा जाता है।
    [2nd Gra -2023/PTI -2022]
  - युग - ताम्र/काँस्य युग
    [ARO-22/1st Gra -22/3rd Gra -23
- **उत्खनन** - 1977 में आर. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में ।
  [2nd Gra/Lab Ass – 2022]
- **मृद्भांड** - कपीशवर्णी(गैरिक) मृद्पात्र। [School Lect -22]
- **वृहदाकार पत्थर** के बाँध का प्रमाण।
- **मकान पत्थर के** बनाए गए थे। [CET -23/Lab Ass -22]
  - **ईंटो** के उपयोग का कोई **प्रमाण नही** ।
- ताँबे का **बाण** और **मछली** पकड़ने का **काँटा** प्राप्त हुआ।
  [PTI – 2023]

लाछूरा सभ्यता

- भीलवाड़ा जिले की **आसींद तहसील** में स्थित है।
- **उत्खनन**- 1998-1999 में बी. आर. मीना के निर्देशन में ।
- **अवधि** 700 ई. पू. से 200 ई. तक ।
- **खोजे-**
  - मानव तथा पशुओं की मृण्मूर्तियाँ
  - तांबे की चूड़ियाँ
  - मिट्टी की मुहरें (ब्राह्मी लिपि में 4 अक्षर अंकित) है।
  - ललितासन में नारी की मृण्मूर्ति

- जोधपुरा सभ्यता में "मानव आवास के चिन्ह फर्श व ईंटों की दीवार के रूप में मिलते है।
- मकान की छतों में टाइल्स का प्रयोग किया गया था।

जोधपुरा सभ्यता

- **कोटपूतली - बहरोड़** में **साबी नदी** के किनारे स्थित ।
  [JEN – 2016]
- **लौहयुगीन (पीरियड-III)** प्राचीन सभ्यता स्थल
  [Ayurveda Lect -2021]
  - लौह धातु का **निष्कर्षण** करने वाली **भट्टियाँ** भी खोजी गई।

- **अवधि** - 2500 ईसा पूर्व से 200 ई.
- **उत्खनन**- 1972-73 में आर .सी. अग्रवाल और विजयी कुमार द्वारा
- **कपिशवर्णी मृद्पात्रों** का भंडार प्राप्त
  - स्लेटी रंग की चित्रित मृद्भांड संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल
- **घोड़े** का उपयोग **रथ खींचने** हेतु किया जाता था।
- मकान की छतो पर **टाईल्स** एवं **छप्पर छाने** का प्रयोग।
- **मुख्य आहार** - चावल व मांस
- **शुंग** व **कुषाणकालीन सभ्यता**

ताम्रपाषाण कालीन स्थल	
स्थल	**विशेषताएँ**
मेहरगढ़	• तीन संस्कृतियों के साक्ष्य प्राप्त - नवपाषाणकालीन, क्वेटा संस्कृति और हड़प्पा कालीन संस्कृति • कपास की खेती का प्राचीनतम साध्य प्राप्त ।
मेढ़ी - पूर्व बलोचिस्तान	• कुल्ली नाल संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल। • ताँबे को गलाकर टिन के निर्माण का साक्ष्य प्राप्त। • दफनाने, दाहसंस्कार एवं कलश शवाधान के साक्ष्य भी प्राप्त ।
आमरी	• पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में स्थित। • चार संस्कृतियों की जानकारी : ○ आमरी संस्कृति ○ हड़प्पा संस्कृति ○ झुकर संस्कृति ○ झांगर संस्कृति
रानाघुन्दई	• पाकिस्तान में गोमलघाटी के झोलारलाई क्षेत्र में स्थित। • खोज: ○ कूबड़दार बैल की मूर्ति ○ सोने की पिन ○ घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं।
कोटदीजी	• प्राप्त सोलह स्तर 2 संस्कृतियों से सम्बद्ध है: ○ ऊपर के तीन स्तर हडप्पा काल से ○ एक संक्रमण काल से ○ नीचे के बारह स्तर हड़प्पा पूर्व काल से
कालीबंगा	• पूर्व हड़प्पा संस्कृति तथा हड़प्पा संस्कृति से संबंद्ध ।
मुंडीगाक	• ऊँची दीवार तथा उसके ऊपर धूप में पक्की ईंटों की बुर्ज का साक्ष्य।

प्राक् हड़प्पा, विकसित व उत्तर हड़प्पा संस्कृति

कालीबंगा (हनुमानगढ़)

- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
  [Raj Police – 2022, Lab Ass – 2022]
- **सर्वप्रथम खोज** – 1952 ई. [Raj Police – 2022]
- **खोजकर्ता** – अमलानन्द घोष। [3rd Grade – 2023]
  - उत्खननकर्ता - 1961 से 69 ई. के मध्य में बी. बी. लाल, बी. के. थापर, श्री एम,डी. खरे, के. एम, श्रीवास्तव, एस,पी. श्रीवास्तव ने करवाया।
    [1st/2nd Grade – 2022, 3rd Grade - 2023]

  उत्तरदायित्व - भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली
  [CET -2023]

  उत्खननकर्ता चरण - 5
  [CET – 2023, 1st Grade -2022
  - **कालीबंगा** की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी। [CET – 2023]

- **स्थिति** - राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम में [जेल प्रहरी – 2018]
- विश्व का **सर्वप्रथम जोता हुआ खेत** प्राप्त हुआ है।
  [Raj PSI – 2021, Lab Ass -2022]
  - इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
  - खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
  - गेहूँ,जौ चना, बाजरा और सरसों के साक्ष्य भी मिले हैं।
    [Ayurveda Lect – 2021]
- **2900 ईसा पूर्व** तक यहाँ एक **विकसित नगर** था।
- **लिपि**- सैन्धव लिपि
- **कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ**
  - **ताम्र औजार व मूर्तियाँ**
    - साक्ष्य प्रदान करती है कि मानव प्रस्तर युग से **ताम्रयुग में प्रवेश** कर चुका था।
    - **ताँबे** की **काली चूड़ियों** की वजह से ही इसे **कालीबंगा** कहा गया।
  - **मुहरें**
    - सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता की मिट्टी पर बनी **मुहरें प्राप्त**
      - ✓ **वृषभ** व **अन्य पशुओं** के चित्र
      - ✓ **सैन्धव लिपि** में **अंकित लेख** है - अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
  - दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
  - **तौलने के बाट**
    - पत्थर से बने **तोलने के बाट** का उपयोग करना मानव सीख गया था।

- **बर्तन**
  - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के **छोटे-बड़े बर्तन** भी प्राप्त जिन पर **चित्रांकन** भी किया हुआ है।
  - बर्तन बनाने हेतु **'चारु' का प्रयोग** होने लगा था ।

- कालीबंगा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृदभाण्डों को उनके आकार, बनावट और मुख्यतः उनके रंग के आधार पर 6 उपभागों में विभाजित किया गया है।
- अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्योमितीय, पशुपक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है। [IPO -2018]

- **आभूषण**
  - **स्त्री व पुरुषों** द्वारा **प्रयुक्त** होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
  - **उदाहरण** - कंगन, चूड़ियाँ आदि।
- **नगर नियोजन**
  - सूर्य से **तपी हुई ईटों** से बने मकान
  - **दरवाज़े**
  - पाँच से साढ़े पांच मीटर चौड़ी एवं **समकोण पर काटती सड़कें**
  - **कुएँ, नालियाँ** आदि **पूर्व योजना** के अनुसार निर्मित।
  - मोहनजोदडो के विपरीत **घर कच्ची ईंटो** के बने थे।
- **कृषि-कार्य संबंधी अवशेष**
  - **कपास** की **खेती** के अवशेष प्राप्त
  - **मिश्रित खेती** (चना व सरसो) के साक्ष्य।
  - **हल** से अंकित **रेखाएँ** भी प्राप्त जो यह सिद्ध करती हैं कि यहाँ का **मानव कृषि कार्य** भी करता था।

- कालीबंगा में कोई स्पष्ट घरेलु या शेहरी जल निकास प्रणाली नहीं थी।
  - केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- छेद किए हुए किवाड़ और सिंध क्षेत्र के बाहर मुद्रा पर **व्याघ्र का अंकन एकमात्र** इसी स्थान से मिले है।
- मिट्टी की अलंकृत ईंटों से बने चबूतरे, फर्श [CL – 2016]
- कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद किये जाने का प्रमाण मिला है।
  - शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण
- 2600 ई.पू. में आये "**भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य**" मिला है।
- लोहे एवं शैल चित्र का कोई प्रमाण यहाँ नहीं मिला

[3rd Grade/PTI(G-II) – 2023]

- पुष्टि **बैल** व अन्य पालतू **पशुओं** की **मूर्तियों** से भी होती हैं
  - **बैल** व **बारहसिंघा** की **अस्थियाँ** भी प्राप्त हुई।
  - **बैलगाड़ी** के **खिलौने** प्राप्त हुए।
- **खिलौने**
  - लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो **बच्चों** के **मनोरंजन** के प्रति **आकर्षण** प्रकट करते हैं।
- **धर्म संबंधी अवशेष**
  - मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति कालीबंगा से **मातृदेवी की मूर्ति नहीं मिली।**

- **सात आयताकार** व **अंडाकार अग्निवेदियाँ** तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई।

[Raj PSI -21, Lab Ass/ FG -22]

- यह साक्ष्य देता है कि मानव **यज्ञ** में **पशु-बलि** भी दिया करते थे।
- **दुर्ग (किला)**
  - अन्य केन्द्रो से भिन्न एक **विशाल दुर्ग** (दोहरी रक्षा - प्राचीर से घिरा हुआ) के **अवशेष** भी प्राप्त हुए। [CET – 2023]
  - मानव द्वारा अपनाए गए **सुरक्षात्मक उपायों** का **प्रमाण** है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- हनुमानगढ़ जिले में **सरस्वती नदी** / **घग्गर नदी** के निकट स्थित हैं। [ARO – 2022]
- **प्रस्तरयुगीन और धातुयुगीन** सभ्यता है।
- **उत्खनन**- डॉ. हन्नारिड के निर्देशन में एक स्वीडिश कंपनी द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया। [JEN -2016]
- **कुषाणकालीन** व उससे पहले की **105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई।
- ब्राह्मी लिपि ने नाम से अंकित **2 कांस्य मुहरें** प्राप्त
- मुख्य रूप से **चावल** की **खेती** [ARO – 2022]
- **मकानों** का **निर्माण ईंटो** से हुआ।
- **मृद्भांड** - लाल व गुलाबी रंग के
  - चाक से बने, पतले व चिकने होते थे।
- **गुरु** - शिष्य मृदा मूर्ति मिली।
  - **कुषाण कालीन** सभ्यता के सामान मिले।

बरोर

- गंगानगर में **सरस्वती नदी** के तट पर स्थित।
- **उत्खनन** - 2003 ईमें .।
- **प्राक्, प्रारंभिक** तथा **विकसित हड़प्पा काल** में विभाजित।
- **विशेषता** - मृद्भांडों में **काली मिट्टी** के **प्रयोग** के **प्रमाण** प्राप्त हुए हैं।
  - **वर्ष 2006** - मिट्टी के पात्र में सेलखड़ी के 8000 मनके प्राप्त हुए हैं।
- **हड़प्पाकालीन विशेषताओं के समान** जैसे:
  - सुनियोजित नगर व्यवस्था
  - मकान निर्माण में कच्ची इटों का प्रयोग
  - विशिष्ट मृद्भांड परम्परा
- **बटन** के **आकार** की **मुहरे** प्राप्त हुई।

लौहयुगीन संस्कृति

इसे "आदि आर्यों की संस्कृति" के रूप में स्वीकार किया जा चुका है।

बैराठ सभ्यता

- बैराठ बाणगंगा नदी के किनारे **वर्तमान कोटपुतली - बहरोड़** जिले के **विराट नगर** में स्थित है।
- **लौहयुगीन** सभ्यता है।
- **प्राचीन नाम**- विराटनगर ।
  - **मत्स्य महाजनपद** की **राजधानी।**

[जेल प्रहरी -17/ Women Sup-19]
- **खोजकर्ता** - 1837 में कैप्टन बर्ट।
- **उत्खननकर्ता**- 1936-37 में दयाराम साहनी, 1962-63 में नीलरतन बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित।

[School Lect -2022, 2nd Gra PTI(G-II) – 2023]
- 1837 में **कैप्टन** बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक के **प्रथम भाब्रू शिलालेख** की खोज की गई थी। [2nd Grade- 2023]

बैराठ का पुरातात्विक महत्त्व

तीन पहाड़ियाँ सर्वप्रमुख – पाषाण ताम्र पाषाण, लौहयुगीन सामग्री अशोक का खंडित शिलालेख, शंख लिपि के प्रमाण बाँध विहार बाँध चेत्य के अवशेष आहत मुद्राएँ यूनानी मुद्राएँ, भारत में द्वितीय नागरीकरण आदि के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। [Raj Police – 2022]

- बैराठ से बड़ी मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होने के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला कहा जाता है।

[2nd Grade – 2019]
- उत्तर भारतीय काले चमकदार मृद्भांड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों में राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल विराटनगर है।
- रहस्यमयी शंख लिपि के प्रचुर संख्या में प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

- **पुरातत्व** के महत्व की **तीन पहाड़ियाँ**:

[forest guard/ARO/2nd Gra -2022]
  - बीज़क डूँगरी
  - भीम डूँगरी
  - महादेव डूँगरी
- **36 मुद्राएँ प्राप्त** - 8 चांदी के पंचमार्क सिक्के, 28 इंडो-ग्रीक तथा यूनानी [RAS -2018, 3rd Grade/CET - 2023]
- बौद्ध धर्म के **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष।
- भवन निर्माण के लिए **मिट्टी की ईंटो** का **अत्यधिक प्रयोग**।
- माना जाता है कि इसकी **समाप्ति हूण शासक मिहिरकुल** द्वारा की गई।
- महाभारत के अनुसार, यहाँ में पांडवों ने अज्ञातवास के समय जीवनयापन किया था [Raj Police – 2022]
- यहाँ 300 ई. पू. से 300 ई. तक के काल गोल चैत्यगृह मिला है [3rd Grade – 2023, Lab Ass – 2022]
- बौद्ध संस्कृति, महाभारत काल , महाजनपद काल , मौर्य काल , गुप्त काल , हर्ष काल आदि की जानकारी मिलती है।

[EO/RO -2023, CET -2023, Raj Police - 2018]
- यहाँ के निवासी वस्त्र- बुनाई की तकनीक से परिचित थे

[2nd Grade - 2023]

रैढ़ सभ्यता

- टोंक जिले की **निवाई तहसील** में **ढील नदी** के किनारे स्थित**।**
- **इसे प्राचीन राजस्थान का टाटानगर** कहा जाता है**।**

[वनरक्षक -2022]
- **उत्खननकर्ता** - 1938-39 में दयाराम साहनी और उसके बाद डॉ. केदारनाथ पूरी द्वारा**।** [जेल प्रहरी – 2018]
- **3075 आहत मुद्राएँ** तथा **300 मालव जनपद** के **सिक्के** प्राप्त**।**
  - मालव जनपद की लौह सामग्रियाँ भी मिली अंत: इसे मालव नगर भी कहा जाता है

[RAS -2023, Patwar - 2011]
  - यूनानी शासक **अपोलोडोट्स** का एक **खंडित सिक्का** भी प्राप्त हुआ**।** [JEN – 2016]
- **मृद्भांड चाक** से **निर्मित** मात्रदेवी व शक्ति की मूर्तियों के अवशेष भी प्राप्त**।**
- **विभिन्न आभूषण** - कर्णफूल, हार, पायल आदि**।**
- **आलीशान इमारतों** के अवशेष**।**
- **एशिया** का अब तक का **सबसे बड़ा सिक्को का भण्डार।**

नगर सभ्यता - खेड़ा सभ्यता

- **टोंक** जिले में उणियारा कस्बे के पास स्थित है।

[Const-2022, Vet Off -2020]
- **अन्य नाम** -कर्कोट नगर, मातव नगर।
- **उत्खननकर्ता**- 1942-43 में श्रीकृष्ण देव द्वारा ।
- **खोज**-
  - बड़ी संख्या में मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएं प्राप्त ।
  - मृदभांडो के अधिकतर अवशेषों का रंग लाल है।
  - उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति प्राप्त।
  - मोदक रूप में गणेश का अंकन
  - फणधारी नाग का अंकन
  - कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा
- वर्तमान में **खेडा सभ्यता** के नाम से जाना जाता है।
- लाल रंग के **मृदभाड़** एवं **अनाज** भरने के **कलात्मक मटकों** के **अवशेष** प्राप्त ।

ईसवाल (उदयपुर)

- 5वीं शताब्दी ई.पू. में **लोहा गलाने का उद्योग विकसित** होने के प्रमाण मिले।
  - **प्राचीन औद्योगिक बस्ती** भी कहा जाता है।
- **उत्खनन** -राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के पुरातत्व विभाग के निर्देशन में ।
  - उत्खनन में **ऊँट के दाँत** एवं **हड्डियाँ** मिली।

- **प्राक् ऐतिहासिक** काल से **मध्यकाल** तक का प्रतिनिधित्व करने वाली **मानव बस्ती** के प्रमाण पाँच स्तरों से प्राप्त।
- प्राप्त सिक्कों को **प्रारंभिक कुषाणकालीन** माना जाता है।
- **मकान पत्थरों** से बनाये गए।

नोह (भरतपुर)

- **उत्खनन** - 1963-64 में रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में।
- **अवधि** - 1100 ई.पू. - 900 ई.पू.
- **मृद्भांड** - काले व लाल मृद्भांड संस्कृति
- मौर्यकालीन पॉलिस की हुई विशालकाय **यक्ष/ जाखबाबा** प्रतिमा और 16 रिंगवेल प्राप्त हुई है [JSA -2019, JEN – 2016]
- उत्खनन से ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं [FSO-2023]

चन्द्रावती (आबू-सिरोही)

- एक "**अनाज ग्रह का कोठार**" प्राप्त हुआ है।

भीनमाल, जालौर [Constable – 2022]

- **उत्खनन**- 1953-54 में रतनचंद्र अग्रवाल के निर्देशन में ।
- **मृदपात्रों** पर **विदेशी प्रभाव** था।
- खुदाई से मृद्भाण्ड तथा **शक क्षेत्रों** के **सिक्के** प्राप्त हुए हैं ।
- **रोमन ऐम्फोरा/ यूनानी दुहत्थी** सुराही भी प्राप्त हुए हैं।
- ईसा की **प्रथम शताब्दी** एवं **गुप्तकालीन अवशेष** प्राप्त हुए हैं।
- संस्कृत विद्वान **महाकवि माघ** एवं **गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त** का **जन्म स्थान** माना जाता है ।
- चीनी यात्री **ह्वेनसांग** ने यात्रा की।

जूनाखेड़ा (पाली)

- **खोजकर्ता** - 1883-84 में एच.डब्ल्यू.बी.के. गैरिक द्वारा।
- **मिट्टी के बर्तन** पर **शालभंजिका** का अंकन ।

नगरी सभ्यता/ मध्यमिका

- यह सभ्यता चित्तौडगढ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है जिसका प्राचीन नाम मध्यमिका है।
- इस सभ्यता की खोज 1872 ई. में कार्लाइल द्वारा की गई।
- सर्वप्रथम उत्खनन 1904 ई. में डॉ. डी. आर. भण्डारकर द्वारा तथा तत्पश्चात 1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया।
- यहाँ से शिवि जनपद के सिक्के तथा गुप्तकालीन कला के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- प्राचीन नाम में माध्यमिका पतंजलि के महाभाष्य में तथा महाभारत में मिलता है।
- नगरी सभ्यता से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है।
- नगरी शिवि जनपद की राजधानी रही है।
- मध्य पुराषाणकाल के उपकरण चित्तौड़गढ़ जिले के बनास-बेड़च नदी तंत्र की वागन और कादमाली नदी घाटियों तथा कोटा में चंबल नदी घाटी में पाए गए हैं। [EO/RP – 2023]

राज्य की प्रमुख संस्कृतियाँ निम्नलिखित हैं

आर्य सभ्यता

- यह एक **ग्रामीण सभ्यता** के रूप में विकसित हुई।
- आर्यवासियों ने **पशुपालन** के साथ **कृषि** को भी अपनाया था।
- राजस्थान में **आर्य** सर्वप्रथम **उत्तर पूर्वी भाग** में आकर बसे।
- **विकास** - 1000-600 ईसा पूर्व ।
- **प्रमाण** – अनूपगढ़ जिला व तरखान वाला डेरा (श्री गंगानगर) से प्राप्त।
- **अधिकांश** मात्रा में **मिट्टी के बर्तन** मिले हैं।
- **महत्वपूर्ण स्थल**- जोधपुरा, बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़), नोह (भरतपुर), सुनारी (नीमकाथाना)।

बागोर सभ्यता

- भीलवाड़ा के निकट **कोठारी नदी** के किनारे स्थित। [ACF/FRO -2021,वनपाल -2022]
- **पाषाणकालीन सभ्यता** स्थल है।
- **उत्खननकर्ता** – 1967-68 में डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस .लेश्निक [AAO -2022]
- **मुख्य उत्खनन स्थल -** महासतियों का टीला [प्रवक्ता (DoTE) -2021]
- "**आदिम संस्कृति का संग्रहालय**" माना जाता है
- **14 प्रकार** की **कृषि** के अवशेष मिले है।
- **मुख्य कार्य** - कृष, पशुपालन व आखेट
  - **कृषि** व **पशुपालन** के **प्राचीनतम** साक्ष्य मिले।
- **पाँच मानव कंकाल प्राप्त -** जो सुनियोजित ढंग से दफ़नाए गये थे।
  - एक कंकाल के गले में पत्थर व हड्डियों का हार पाया गया [1st Grade – 2022]
- **पाषाण** युग की **सर्वाधिक** सामग्री प्राप्त ।
  - **मुख्य उपकरण**- ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपेर, चंद्रिक
  - इसके **अतिरिक्त** तक्षणी, खुरचनी, तथा बेधक भी बड़ी मात्रा में प्राप्त ।
- मानव **संगठित सामाजिक जीवन** से **दूर।**
- **फर्श** बनाने के लिए **पत्थर** लाये गये थे और यहाँ **फूस** के **वातरोधी पर्दे** भी बनाये गये।
- **उद्योग** - बहुत ही छोटी-**छोटी वस्तुओं** का **निर्माण** और **ज्यामितीय प्रारूपों** की दृष्टि से अत्यंत **उन्नत** ।

सुनारी सभ्यता

- नीमकाथाना की **खेतड़ी तहसील** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित।
- **उत्खनन**- 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा।
- **लोहा गलाने** की **प्राचीनतम भट्टियाँ** प्राप्त ।
- स्लेटी रंग के **मृदभांड प्राप्त** ।
  - मौर्यकालीन सभ्यता के **अवशेष** जिनमें **काली पॉलिश** युक्त **मृदपात्र** है।
- मातृदेवी की **मृण्मूर्तियाँ** तथा **धान संग्रहण** का **कोठा** भी प्राप्त ।
- **शुंग** तथा **कुषाणकालीन अवशेष** भी प्राप्त ।
- **निवासी चावल** का **प्रयोग** करते थे तथा घोड़ों से रथ खींचते थे।

- लोहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लोहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मुदपात्र भी मिले हैं।

नलियासर सभ्यता
- **जयपुर ग्रामीण** में स्थित है।
- **चौहान वंश** से **पूर्व** की **सभ्यता** के प्रमाण प्राप्त हुए।
- ब्राह्मी लिपि में **लिखित** कुछ **मुहरें** प्राप्त हुई।
  - आहत मुद्राएँ, उत्तर इण्डोसेनियन सिक्के, कुषाण शासक हुविस्क, इण्डोग्रीक, यौधेयगण तथा गुप्तकालीन चाँदी के सिक्के प्राप्त ।
  - 105 कुषाणकालीन सिक्के ।
  - **अवधि** : तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी सदी तक।

कुराड़ा सभ्यता
- **परबतसर (डीडवाना – कुचामन)** में स्थित है। [3rd Grade – 2006]
- **ताम्रयुगीन** सभ्यता स्थल।
- ताम्र उपकरणों के अतिरिक्त **प्रणालीयुक्त अर्ध्यपत्र** प्राप्त हुआ है।

किराडोत सभ्यता
- **जयपुर ग्रामीण** में स्थित है।
- **ताम्रयुगीन 56 चूड़ियाँ** प्राप्त ।
  - अलग-अलग आकार की **28 चूड़ियों** के 2 सेट पाए गए।

गरड़दा सभ्यता
- **बूँदी** में **स्थित** है।
- **छाजा नदी** के किनारे स्थित है।
- पहली **बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग** प्राप्त ।
  - देश में **प्रथम पुरातत्व महत्त्व की पेंटिंग।**

आलनिया सभ्यता
- आलनिया नदी (कोटा)
- चट्टानेश्वर मंदिर के पास पाँच समूहों में प्रागैतिहासिक एवं अन्य काल 35 शैलाश्रय खोजे गई ।
- **खोजकर्ता** - डॉ. जगतनारायण श्रीवास्तव, डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर [Patwar Mains- 2016]

कोटड़ा सभ्यता
- **झालावाड़** में स्थित है।
- **उत्खनन** - 2003 में दीपक शोध संस्थान द्वारा ।
- **अवधि**- 7वीं से 12वीं शताब्दी मध्य के अवशेष ।

मलाह सभ्यता
- भरतपुर जिले के **घना पक्षी अभयारण्य** में स्थित है।
- अधिक संख्या में **ताँबे** की **तलवारे** एवं **हार्पून प्राप्त।**

कणसव सभ्यता
- **कोटा** में स्थित है।
- मौर्य शासक **धवल** का **738 ई. से संबंधित लेख** प्राप्त।

नैनवा सभ्यता
- **बूँदी** में स्थित है।
- **उत्खनन**- श्रीकृष्ण देव द्वारा।
- 2000 वर्ष पुरान **महिषासुरमर्दिनी** की **मृण्मूर्ति** प्राप्त।

सी.ए. हैकेट ने बूँदी और जयपुर, इन्द्रगढ में यहाँ से क्वार्टजाइट से बनी पूर्व पाषाणकालीन हस्तकुठार (कुल्हाड़ी) सर्वप्रथम प्राप्त की थी [वनपाल -2022/EO/RO – 2023]

डडीकर सभ्यता
- **अलवर** में स्थित है। [FSO -2019]
- पाँच से सात हजार वर्ष पुराने **शैलचित्र प्राप्त**।

सोंथी सभ्यता
- **बीकानेर** में स्थित है।
- **खोजकर्ता**- अमलानंद घोष (1953 में)।
- **कालीबंगा प्रथम** के नाम से प्रसिद्ध।
- **हड़प्पाकालीन सभ्यता** के **अवशेष** प्राप्त।

बांका सभ्यता
- **भीलवाड़ा** जिले में स्थित है।
- राजस्थान की **प्रथम अलंकृत गुफा** की खोज।

गुरारा सभ्यता
- **गुरारा गाँव श्री माधोपुर तहसील (नीमकाथाना)** जिले में स्थित है।
- **चाँदी** के **2744 पंचमार्क सिक्के** मिले।

बयाना सभ्यता
- **भरतपुर** में स्थित है।
- **प्राचीन नाम** -श्रीपंथ
- गुप्तकालीन सिक्के एवं **नील** की **खेती** के साक्ष्य प्राप्त।

तिलवाड़ा सभ्यता
- बालोतरा जिले में **लूणी नदी** के **किनारे** स्थित है।
- **उत्खनन**: 1967-68 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा ।
  - **उत्खननकर्ता**- डॉ. वी. एन. मिश्र के नेतृत्व में।
- एक **ताम्र पाषाणकालीन स्थल है।**
- **अवधि**- 500 ई. पू. से 200 ई. तक।
- **खोज** -
  - उत्तर पाषाण युग के भी अवशेष प्राप्त ।
  - पाँच आवास स्थलों के अवशेष।
  - एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले।

राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

काल	स्थल	औज़ार
पुरापाषाण [पशुधन सहायक – 2022, SCI - 2022]	• डीडवाना (प्राचीनतम स्थल), जायल (नागौर),बैराठ (कोटपुतली – बहरोड़) • भानगढ़ (अलवर), इंद्रगढ़ (कोटा) • बूढा पुष्कर (अजमेर)	हैण्डएक्स क्लीवर चापर चैपिंग

मध्यपाषाण (माइक्रोलिथ) [Ass Prof – 2021/Const - 2022]	• बागोर (भीलवाड़ा) • बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़) • सोजत • धनेरी • तिलवाड़ा	स्क्रेपर प्वाइंट
नवपाषाण	• इस काल में कोई भी सभ्यता या संस्कृति राजस्थान में नहीं मिलती है।	सेल्ट बसूला कुल्हाड़ी
ताम्रपाषाण	• आहड़ (उदयपुर) • गिलुण्ड(राजसमन्द) • कालीबंगा(हनुमानगढ़) • झर (जयपुर ग्रामीण) • बागोर (भीलवाड़ा) • तिलवाड़ा (बाड़मेर) • बालाथल (उदयपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
ताम्रयुगीन [3rd Grade / RAS -2023]	• नीमकाथाना (सीकर) • बेणेश्वर (डूँगरपुर) • नंदलालपुरा • किराड़ोत • चौथवाडी (जयपुर ग्रामीण) • साबणियां • पूंगल (बीकानेर) • कुराड़ा (परबतसर) • पिण्ड पाड़लिया (चित्तौड़) • पलाना (जालौर) • कोल माहौली (सवाई माधोपुर) • मलाह (भरतपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
लौहयुगीन	• नोह (भरतपुर) , बैराठ , जोधपुरा • सांभर (जयपुर) , सुनारी (नीमकाथाना) , रैढ • नगर	विविध प्रकार के औज़ार
	• नैनवा (टोंक), भीनमाल (जालौर) , नगरी (चित्तौड़गढ़) • चक - 84 • तरखानवाला (गंगानगर)	

विभिन्न स्थल और उनके उत्खननकर्ता

स्थल/ सभ्यता	उत्खननकर्ता
इंद्रगढ़ और जयपुर	1870 में सी.ए. हैकेट द्वारा
झालावाड़	1928 में सेटनकार द्वारा
नगरी	डॉ. भंडारकर, सौन्दराजन केन्द्रीय पुरातात्विक विभाग
कुराड़ा	1934 में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा
बैराठ	दयाराम साहनी, नीलरत्न बनर्जी , कैलाशनाथ दीक्षित
रैढ	डॉ. केदारनाथ पूरी, पी.ए. चक्रवर्ती, विजयकुमार
कालीबंगा	अमलानंद घोष, बी.बी. लाल, जे.वी. जोशी, बी.के. थापर
रंगमहल, बड़ोपोल डाबरी	डॉ. हन्नारिक
आहड़	अक्षयकीर्ति व्यास, आर.सी. अग्रवाल, वी.एन. मिश्र, एच.डी. सांकलिया
जोधपुरा	आर.सी. अग्रवाल, विजयकुमार
भीनमाल	आर.सी. अग्रवाल
गिलुण्ड	बी.बी. लाल
नोह	आर.सी. अग्रवाल
बालाथल	वी.एन. मिश्र, वी.एस. सिंह, आर.के. मोहन्त, देव कोठारी
ओझियाना	भारतीय सर्वेक्षण विभाग
गणेश्वर	आर.सी. अग्रवाल
बागोर	वी.एन.मिश्र, एस.एल. लैशानी

2 CHAPTER गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश (6 वीं शताब्दी से 12 वीं शताब्दी तक)

- प्रतिहार का अर्थ द्वारपाल होता है।
- गर्जर-प्रतिहारों मे गुर्जर जाति का प्रतीक न होकर एक क्षेत्र/जगह विशेष का प्रतीक है।
- चीनी यात्री हवेंसाग ने भी गुर्जर-प्रतिहार मे गुर्जर जगह का प्रतीक है व अपनी पुस्तक सी.यू.की. मे लिखा है कि प्रतिहार गुजरात की सीमा के सुरक्षा प्रहरी थे।
- उत्तर - पश्चिम भारत में गुर्जर - प्रतिहार वंश का शासन मुख्यत: 8 वीं से 12 वीं सदी तक माना जाता है।

[Raj Police – 2022]

एहोल अभिलेख

- सर्वप्रथम गुर्जर जाति का उल्लेख एहोल अभिलेख मे है।
- एहोल अभिलेख चालुक्य राजा पुलकेशियन द्वितिय का है जिसे रबी किर्ति जैन द्वारा 633-34 ई. मे संस्कृत भाषा मे लिखा गया।
- गुर्जर प्रतिहार शासक स्वयं को राम के पुत्र कुश का वंशज मानते है अतः इतिहास मे सुर्यवंशी कहलाये ।
- मुहणौत नैणसी के अनुसार भारत में गुर्जर प्रतिहारो कि 26 शाखाए है जिनमे से राजस्थान मे मण्डोर और भीनमाल मुख्य है। [HM-2021/2nd Grade – 2023]
- नीलगुण्ड, रामनपुर, देवली एवं करहाड़ के शिलालेखों में प्रतिहारों को 'गुर्जर' नाम से संबोधित किया गया है।

[2nd Grade – 2017]

- बादामी के चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम हुआ है।
- प्रसिद्ध इतिहासकार रमेश चन्द्र मजूमदार के अनुसार गुर्जर-प्रतिहारों ने 6 वीं से 12 वीं सदी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम किया।

[2nd Grade – 2011]

स्थापना

- गुर्जर प्रतिहारों का **(मंडोर शाखा**) संस्थापक **हरिशचन्द्र ('रोहिलद्धि)** था। [वनरक्षक/2nd Grade -2022]
- गुर्जर प्रतिहारो की प्रारम्भिक राजधानी मण्डोर थी।
- मण्डोर के प्रतिहार क्षत्रिय माने जाते थे।

[2nd Grade -2011]

- मण्डोर वर्तमान मे जोधपुर में स्थित है।

मण्डोर शाखा के प्रतिहार शासकों का कालक्रम क्रमश : [School Lect 2022]
हरिश्चन्द्र (रोहिल्लद्धि), रज्जिल, नरभट्ट, नागभट्ट, तात (टाटा), भोज, यशोवर्धन, चन्दुक, शीलुक, झोट, भिलादित्य, कक्क, बाउक, कक्कुक है।

- हरिशचन्द्र के पुत्र रज़्जिल से ही गुर्जर प्रतिहार वंश की वंशावली प्रारम्भ होती है। [2nd Grade -2023]
- रज़्जिल के **पौत्र नागभट्ट प्रथम** ने भीनमाल को जीता था।

नागभट्ट प्रथम-(730-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम ने **भीनमाल को जीतकर अपनी राजधानी** बनाया।
- **भीनमाल शाखा** का **संस्थापक नागभट्ट प्रथम** था।
- नागभट्ट प्रथम गुर्जर प्रतिहार शासक था जिसने अरबों को पराजित किया। [Raj Police – 22/CET -23]
- नागभट्ट प्रथम ने ही **जालौर का किला** बनवाया व उज्जैन पर अधिकार किया।

गुर्जर प्रतिहार वंश के शासक

- नागभट्ट प्रथम (730-760)
- नागभट्ट द्वितीय (795-833)
- महेन्द्रपाल प्रथम (885-910)
- भोज द्वितीय (910-913)
- महिपाल प्रथम (914-943)
- महेन्द्रपाल द्वितीय (945-948)
- देवपाल (948-949)
- त्रिलोचनपाल (1019-1027)
- यशपाल (अंतिम राजा)

- अवन्ती के प्राचीन नगर उज्जैन को राजधानी बनाया (**दशरथ शर्मा के अनुसार -जालौर)**
- नागभट्ट प्रथम को **ग्वालियर प्रशस्ति में मेघनाथ के युद्ध का अवरोधक/**नासक व विशुद्ध क्षत्रीय राजा कहा है।
- नागभट्ट प्रथम का **दरबार नागावलोक का दरबा**र कहलाता है।
- **चीनी यात्री** ह्वेनसांग **ने** भीनमाल को **पिलो भीलों** का नाम दिया जिसको **श्रीमाल** के नाम से भी जाना जात था ।

[2nd grade – 2019/ Raj Police -2023]

नागभट्ट प्रथम के प्रमुख राजधानी वाले शहर

- **मंडोर (जोधपुर)**
- **मेड़ता (नागौर)** [2nd Grade -2022]
- श्रीमाल /भीनमाल (**जालौर)**

[2nd Grade – 2017]

- उज्जैन
- भीनमाल खगोलविद् ब्रह्मगुप्त व महाकवि माघ (हर्षवर्धन के समय) की जन्म स्थली के तौर पर जानी जाती है

[REET-2021/ प्रवक्ता(DoTE -2021]

वत्सराज-(783-795 ई.)

- वत्सराज के शासन काल में कन्नौज को लेकर त्रिराष्ट्र संघर्ष प्रारम्भ हुआ।
- त्रिराष्ट्र संघर्ष में भाग लेने वाले शासक -
- **(अ) गुर्जर प्रतिहार शासक वत्सराज**
- **(ब) पाल वंश (बंगाल) का शासक धर्मपाल**
- **(स) राष्ट्रकूट वंश (द.भारत) का शासक ध्रुव प्रथम**
- त्रिराष्ट्र संघर्ष को प्रारम्भ करने वाला प्रथम शासक वत्सराज था
- वत्सराज ने पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- वत्सराज, ध्रुव प्रथम से पराजित हुआ (प्रथम संघर्ष मे ध्रुव प्रथम विजयी रहा) ।
- पराजित होने के बाद वत्सराज को अपनी राजधानी गवालीपुर/जबालीपुर (जालौर) ले जानी पड़ी।
- विजयी होने के बाद ध्रुव प्रथम ने अपने राष्ट्रकूट वंश के कुल चिन्ह गंगा, यमुना मे स्थापित करवाये।
- सूरत और सन्जन अभिलेख के अनुसार यह युद्ध गंगा व यमुना के दौआब क्षेत्र मे लड़ा गया था।
- **ओसिया के जैन मंदिरो का निर्माण वत्सराज** के शासन काल मे हुआ था।
- ओसिया वर्तमान मे **जोधपुर** मे स्थित है।
- ओसिया को **राजस्थान का भुवनेश्वर** कहा जाता है।
- ओसिया का प्राचीन नाम उपकेश पटन था।
- वत्सराज के शासन काल मे **उधोतन सूरी ने** अपना ग्रंथ **कुवलयमाला** 778 ई. मे जालौर मे लिखा।
- उनके दरबारी जैन मुनि उद्योतन सूरि ने 778 ई. कुवलयमाला ग्रंथ में महाराज वत्सराज को **रणहस्तिन** कहा। [1st Grade – 2022]
- वत्सराज के शासन काल में **जिनसेन सूरी ने हरिवंश पुराण** कि रचना कि थी। [CET – 2023]
- वत्सराज के शासन काल मे **ओसिया मे हरिहर का मंदिर बनाया** गया जो **पंचायतन शैली** का उदाहरण है।
- गुर्जर प्रतिहारों का **वास्तविक संस्थापक वत्सराज** था।

त्रिपक्षीय संघर्ष – [2nd Grade – 2018]

- दक्षिण में राष्ट्रकूट, पूर्व में पाल एवं उत्तरी भारत में गुर्जर-प्रतिहार ।
- कन्नौज पर आधिपत्य के लिए इन तीनों महाशक्तियों के मध्य हुए संघर्ष को 'त्रिपक्षीय संघर्ष' कहा जाता है।
- इसकी शुरुआत प्रतिहार नरेश वत्सराज ने कन्नौज के शासक इन्द्रायुध को पराजित करके की एवं अन्ततः प्रतिहार इसमें सफल हुए।
- प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय ने 816 ई. में कन्नौज के शासक चक्रायुद्ध को हराकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया एवं 100 वर्ष से चले आ रहे इस संघर्ष को विराम दिया।
- यह संघर्ष लगभग 100 वर्ष तक चला था।

नागभट्ट द्वितीय - (795-833 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय ने 816 ई. में कन्नौज पर अधिकार कर गुर्जर प्रतिहार वंश कि राजधानी बनाया [3nd Grade -2022]
- इस समय कन्नौज का राजा चक्रायुद्ध था।
- नागभट्ट द्वितीय ने आयुध वंश और पाल वंश को पराजित करने के बाद **परमभट्टारक महाराजाधिराज पंच परमेश्वर की उपाधि धारण** की थी। [HM -2011]
- नागभद्ट द्वितीय (795-833 ई.) राजा के वंशज गुर्जर-प्रतिहार कहे जाने लगे। [2nd Grade – 2011]
- इस उपाधि का उल्लेख बकुला के अभिलेख में है।
- नागभट्ट द्वितीय ने 833 ई. मे जीवित गंगा मे समाधि ली थी।

ओसियाँ [2nd Grade - 2011]

- जोधपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर फलौदी मार्ग पर स्थित ओसियों में श्वेताम्बर जैन मंदिर, ओसवाल समाज की कुलदेवी सच्चिका माता का मंदिर तथा सूर्य मंदिर के अलावा कुल 16 मंदिर है जिनका निर्माण 7वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य में प्रतिहारों द्वारा करवाया गया।

भोज प्रथम-(836-885 ई.)

- भोज प्रथम को इतिहास मे **मिहिर भोज** के नाम से जाना जाता है।
- भोज प्रथम बंगाल के गोड़ शासक देवपाल का समकालीन था [2nd Grade -2019]
- **उपाधियाँ** -
  - **आदिवराह** (इस उपाधि का उल्लेख ग्वालियर अभिलेख में है। [SCI -2022]
  - **प्रभास (**इस उपाधि का उल्लेख दौलतपुर के अभिलेख में है।
  - भोज प्रथम कि राजनैतिक और सैनिक उपलब्धियों का उल्लेख **कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी** में है।

मिहिर भोज द्वारा रचित ग्रन्थ [JEN -2022]

- योग्यसूत्रवृत्ति, विद्या विनोद, भोजचंपू, शब्दानुशासन, श्रृंगार मंजरी, कृत्यकल्पतरु, राजमुडाड, प्राकृत व्याकरण, आयुर्वेद सर्वस्व, श्रृंगार प्रकाश, कूर्मशतक, युक्तिकल्पतरु, सरस्वती कठठाभरण, राजकार्ताड और सिद्धान्त संग्रह इत्यादि।

- **ग्वालियर प्रशस्ति की रचना** भोज प्रथम के समय की गई। [2nd Grade – 2011]
- भोज प्रथम के समय 851 ई. में अरब यात्री **सुलेमान भारत** आया था जिन्होंने **भोज प्रथम को इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु कहा** था।
- **सुलेमान ने गुर्जर प्रतिहार वंश की सैन्य शक्ति एवं समृद्धि का उल्लेख किया** [2nd Grade 2019/2017]
- भोज प्रथम ने अपने शासन काल मे चाँदी के सिक्के जारी किये थे।

कवि राजशेखर

- महेन्द्रपाल प्रथम एवं महिपाल के राजदरबारी कवि राजशेखर थे। [Coll Lect – 2016]
- राजशेखर ने 'विवशाल भंजिका में अपने शिष्य महेन्द्र पाल को 'रघुकुलतिलक' कर्पूर मंजरी में महाराष्ट्र चूड़ामणि और बाल महाभारत में रघुग्रामणी (रघुवंशियों में अग्रणी) कहा है।
- राजशेखर ने 'बाल महाभारत' नाटक में महेन्द्रपाल के पुत्र महिपाल को रघुवंश मुक्तामणि (रघुवंश रूपी मोतियों में मणि के समान) तथा आर्यावर्त का महाराजाधिराज कहा है।
- इनके दरबारी **कवि राजशेखर** थे जिन्होंने **बाल महाभारत, बाल रामायण, भूवनकोष, काव्यमीमासा और कर्पुरमंजरी नामक ग्रंथ** कि रचना की थी [Raj police – 2022]
- इन्हें **राजा महेन्द्रपाल** का **प्रथम गुरु** भी कहा जाता है [Raj police – 2022]
- **राजा कक्क** ने मुदागिरी (मुँगेर, बिहार) में गौड़ शासक धर्मपाल को परास्त किया।
- राजा कक्क व्याकरण, ज्योतिष, तर्क (न्याय) और सर्वभाषाओं के कवित्व में निपुण था। [Raj Police – 2023]

महेन्द्रपाल प्रथम-(885-910 ई.)

- इतिहासकार बी.एन. पाठक ने इन्हें **अंतिम हिंदु भारत का सम्राट** माना है।

महिपाल-(913-944 ई.)

- राजशेखर ने महिपाल को आर्यावृत का **महाराजाधिराज** कहा था।
- महिपाल के समय अरब यात्री **बगदाद निवासी अलमसूदी भारत** आया।
- अलमसूदी ने महिपाल को **बोहरा राजा** कहा है।

राज्यपाल-(990-1019 ई.)

- इसके समय मे 1018-19 ई. में **महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण** किया था।

यशपाल

- यह गुर्जर प्रतिहार वंश का अंतिम शासक था। [Women Sup – 2015]
- इलाहबाद के कड़ा नामक स्थान पर 1036 ई. का लेख मिला है जिसमे यशपाल के दान का वर्णन मिला है।
- 1093 ई. के आसपास चन्द्रदेव गहड़वाल ने प्रतिहारों से कन्नौज छीनकर गहड़वाल वंश की स्थपाना की

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **मथनदेव** - प्रतिहार गौत्र का गुर्जर महाराजाधिराज सावट का पुत्र,
  - उपाधि - महाराजाधिराज परमेश्वर
  - राजधानी - रायपुर (राजोरगढ़) [PTI -2023]

परमार राजवंश

- परमार का **शब्दिक अर्थ** -शत्रु को मारने वाला होता है।
- प्रारंभ में परमारों का शासनआबू के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित था
- प्रतिहारों की शक्ति के ह्रास के उपरांत परमारों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई।
- **मूल स्थान** - मालवा (मध्यप्रदेश) ।
- **दो मुख्य शाखाएँ**
  - आबू के परमार।
  - मालवा के परमार
- **आबू के परमार**
  - आबू के परमार वंश का **संस्थापक 'धूमराज'** था। [EO/RO -2023]
  - **राजधानी** – चन्द्रावती [1st Grade – 2022]
  - पड़ोसी होने के कारण **आबू के परमारों का गुजरात के शासकों से सतत् संघर्ष** चलता रहा।
  - गुजरात के शासक **मूलराज सोलंकी** से पराजित होने के कारण आबू के शासक **धरणीवराह** को राष्ट्रकूट धवल का शरणागत होना पड़ा।
  - लेकिन कुछ समय बाद **धरणीवराह ने आबू पर पुनः अधिकार** कर लिया।
  - उसके पुत्र **महिपाल का 1002 ई.** में आबू पर अधिकार प्रमाणित होता है। इस समय तक परमारों ने गुजरात के सोलंकियों की अधीनता स्वीकार कर ली।
  - महिपाल के **पुत्र धंधुक ने सोलंकियों की अधीनता से मुक्त होने** का प्रयास किया।
  - फलत: आबू पर **सोलंकी शासक भीमदेव** ने आक्रमण किया।
  - धंधुक आबू छोड़कर **धार के शासक भोज के पास चला** गया।
  - भीमदेव ने **विमलशाह को आबू का प्रशासक** नियुक्त किया।
  - विमलशाह ने **भीमदेव व धंधुक के मध्य पुनः मेल** करवा दिया।
  - उसने **1031 ई. में आबू में 'आदिनाथ' के भव्य मंदिर** का भी निर्माण करवाया।
  - धंधुक की विधवा पुत्री ने बसंतगढ़ में सूर्यमंदिर का निर्माण करवाया व सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया।
  - **कृष्णदेव के शासनकाल में 1060 ई. में परमारों और सोलंकियों के संबंध पुनः बिगड़ गये**, लेकिन **नाडौल के चौहान शासक बालाप्रसाद** ने इनमें पुनः मित्रता करवाई।
  - कृष्णदेव के **पौत्र विक्रमदेव ने महामण्डलेश्वर की उपाधि** धारण की
  - विक्रमदेव का प्रपौत्र **धारावर्ष (1163-1219 ई.) आबू के परमारों का शक्तिशाली शासक** था।
  - **राजा धारावर्ष की रानी का नाम गीगा देवी था।** [Compiler – 2016]

- इसने मो**हम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध में गुजरात की सेना का सेनापतित्व** किया।
- वह **गुजरात के चार सोलंकी** शासकों कु**मारपाल, अजयपाल, मूलराज व भीमदेव द्वितीय** का समकालीन था।
- उसने नाडौल के चौहानों से भी अच्छे संबंध रखे।
- अचलेश्वर के गंदाकिनी कुण्ड पर बनी हुई धारावर्ष की मूर्ति और आर-पार छिद्रित तीन भैंसे उसके पराक्रम की कहानी कहते हैं।
- '**कीर्ति कौमुदी**' नामक ग्रंथ का रचयिता **सोमेश्वर धारावर्ष का कवि** था
- उसके पुत्र सोमसिंह के शासनकाल में तेजपाल ने आबू के **देलवाड़ा गाँव में 'लूणवसही' नामक नेमिनाथ का मंदिर अपने** पुत्र लूणवसही व पत्नी अनुपमादेवी के श्रेयार्थ बनवाया।
- इसके पश्चात् प्रतापसिंह और विक्रम सिंह आबू के शासक बने।
- 1311 ई. के लगभग **नाडोल के चौहान शासक राय लूम्बा** ने परमारों की **राजधानी चन्द्रावती** पर अधिकार कर लिया और यहाँ चौहान प्रभुत्व की स्थापना कर दी।

- **जालौर के परमार** -जालौर के परमार **आबू के परमारों के ही वंशज थे**। जालौर से मिले 1087 ई. के शिलालेख में वाकपतिराज, चन्दन, देवराज, अपराजित, विजल धारावर्ष और विसल के नाम मिलते हैं।
- **मालवा के परमार**
  - मालवा के परमारों का मूल उत्पत्ति स्थान भी आबू था।
  - इनकी राजधानी **उज्जैन या धारानगरी** रही, मगर राजस्थान के कई भू-भाग **कोटा राज्य का दक्षिणी भाग, झालावाड़, वागड़ , प्रतापगढ़ का पूर्वी भाग** आदि इनके अधिकार में थे।
  - मालवा के परमारों का शक्तिशाली **शासक मुंज हुआ**।
  - वाक्पतिराज, अमोघवर्ष उत्पलराज पृथ्वीवल्लभ श्रीवल्लभ आदि इसके विरुद्ध थे।
  - मेवाड़ के शासक **शक्तिकुमार के शासनकाल में उसने आहड़ को नष्ट** किया और चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।
  - उसने **चालुक्य शासक तैलप द्वितीय को छः बार परास्त** किया, मगर सातवीं बार उससे पराजित हुआ और मारा गया।
  - राजा मुंज को '**कवि वृष**' भी कहा जाता है। [JEN -2016]
  - **दरबारी कवि -**
    - **पद्मगुप्त- 'नवसहसांक चरित'** का रचयिता।
    - **हलायुध-** '**अभिदानमाला**' का रचयिता।
  - मुंज के बाद **सिंधुराज और भोज प्रसिद्ध परमार** शासक हुए।
  - **भोज परमार-**अपनी विजयों और विद्यानुराग के लिए प्रसिद्ध था।
  - भोज ने **सरस्वती कण्ठाभरण, राजमृगांक विद्वज्जनमण्डल, समरांगण, श्रृंगार मंजरी कथा, कूर्मशतक आदि ग्रंथ लिखे।**
  - चित्तौड़ में उसने '**त्रिभुवन नारायण**' का प्रसिद्ध शिव मंदिर बनवाया, जो मोकल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। (1429 ई. में राणा मोकल द्वारा जीर्णोद्धार के कारण) ।
  - **कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार** नागदा में **भोजसर का निर्माण**।
  - उसने **सरस्वती कण्ठाभरण नामक पाठशाला** बनवाई।
  - **दरबारी विद्वान-**वल्लभ, मेरूतुंग, वररूचि, सुबन्धु, अमर, राजशेखर, माघ, धनपाल, मानतुंग आदि विद्वान उसके दरबार में थे।
  - भोज का उत्तराधिकारी **जयसिंह** भी एक योग्य शासक था।
  - वागड़ का राजा **मण्डलीक उसका सामंत** था।
  - 1135 ई. के लगभग **मालवा पर चालुक्य शासक सिद्धराज ने अधिकार** कर लिया और परमारों की शक्ति ह्रासोन्मुख हो गई।
  - तेरहवीं शताब्दी में **अर्जुन वर्मा के समय** मालवा पर पुन: परमारों का आधिपत्य स्थापित हुआ मगर यह अल्पकालीन रहा।
  - खिलजियों के आक्रमण ने मालवा के वैभव को नष्ट कर दिया और **परमार भाग कर अजमेर चले** गए।
- **वागड़ के परमार**
  - वागड़ के परमार मालवा के परमार **कृष्णराज के दूसरे पुत्र डम्बरसिंह के वंशज** थे।
  - इनके अधिकार में **डूँगरपुर-बाँसवाड़ा का** राज्य था जिसे वागड़ कहते थे।
  - **अथुर्णा** इनकी राजधानी थी। [JEN -2020]
  - धनिक, कंकदेव, सत्यराज, **चामुण्डराज,** विजयराज आदि इस वंश के शासक हुए।
  - चामुण्डराज ने 1079 ई. में अर्थुणा में **मण्डलेश्वर मंदिर का** निर्माण करवाया।
  - 1179 ई. में **गुहिल शासक सामंतसिंह ने** परमारों से वागड़ छीन कर वहाँ **गुहिल वंश का शासन** स्थापित कर दिया।
  - अर्थुणा के ध्वस्त खण्डहर आज भी परमार काल की कला और समृद्धि की कहानी बयां करते हैं।
- **यादव वंश**
  - चन्द्रवंशी यादवों का शासन राजस्थान में **भरतपुर, धौलपुर व करौली** में रहा।
  - करौली के विजयपाल ने 1040 ई. में **विजयमंदिर गढ़ बनवाया**।
  - तहणपाल ने **तवनगढ़ का निर्माण** करवाया।
  - मोहम्मद गौरी के आक्रमण के बाद कुछ यादव बयाना से निकलकर तिजारा व अलवर के आस-पास बस गए।

- **चावड़ा वंश**
  - राजस्थान में **चावड़ों का राज्य भीनमाल** में रहा। [LAS -2016]
  - 914 ई. के **धरणी वराह के दानपत्र में चावड़ों की उत्पत्ति** भगवान शंकर के चाप (धनुष) से बताई गई।
  - कुछ इतिहासकार इन्हें परमारों की शाखा तो कुछ गुर्जरों की शाखा मानते हैं।
  - कर्नल टॉड ने चावड़ों को **सीथियन** माना है।
  - चीनी यात्री **ह्वेनसांग ने 641** ई. में अपनी भीनमाल यात्रा के दौरान यहाँ के तत्कालीन शासक को क्षत्रिय बताते हुए **भीनमाल को गुर्जर राज्य की राजधानी** बताया।
  - उस समय भीनमाल पर चावड़ों का शासन था।
  - 739 ई. के कलचुरी दानपत्र में भीनमाल पर अरब आक्रमण का उल्लेख है।
  - अरबों के **आक्रमण से कमजोर हुई चावड़ों की शक्ति का फायदा उठाकर प्रतिहारों ने** भीनमाल पर अधिकार कर लिया। [CET – 2023]

- **यौधेय वंश**
  - 'अष्टाध्यायी' के रचयिता पाणिनी ने यौधेय के जांगल देश (बीकानेर, चूरू व श्रीगंगानगर) में निवास का उल्लेख किया।
  - यौधेय गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली से शासित थे।
  - राजस्थान के उत्तर पूर्व और उत्तरी भाग में इनका प्रारंभिक अधिवासन ज्ञात होता है।
  - विजयगढ़ के किले से प्राप्त एक खण्डित लेख में यौधेयों का उल्लेख है।
- **नाग वंश**
  - राजस्थान में नागवंश का शासन अ**हिछत्रपुर (नागौर) के आसपास केन्द्रित** था।
  - 291 ई. के शेरगढ़ (कोटा) शिलालेख में चार नागवंशी शासकों **बिन्दुनाग, पद्मनाम, सर्वनाग व देवदत्त** के नाम मिलते हैं।
  - इस लेख के अनुसार सामंत देवदत्त ने कौशवर्द्धन पर्वत के पूर्व में एक बौद्ध चैत्य का निर्माण करवाया।

Toppersnotes
Unleash the topper in you